

Allah Pak Ke Bare Me 28 Suwal Jawab (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत عالم مشهور بالعلم والعبادة के मल्फूजात का तहरीरी गुलदस्ता



अल्लाह पाक

के बारे में 28 सुवाल जवाब

सफ़्हात 16

“अल्लाह वावा आ जाएगा” कहना कैसा ?

04

“अल्लाह पाक ऊपर है” कहना कैसा ?

06

अल्लाह पाक को इजिरो नाज़िर” कहना कैसा ?

10

अल्लाह पाक को “सग़ी” कहना कैसा है ?

12

संश्लेषे क़रीफ़त, अमीरे अहले सुन्नत, बरनिचे राबते इस्लामी, इज्जते अल्लामा मौलाना अबु क़िषाब

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी عالم مشهور بالعلم والعبادة

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ط
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

अल्लाह पाक के बारे में 28 सुवाल जवाब

दुआए खलीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला : “अल्लाह पाक के बारे में 28 सुवाल जवाब” पढ़ या सुन ले उसे अपनी महबूबत अता फ़रमा और उस की मां बाप और औलाद समेत बे हिसाब बख़िश फ़रमा । اُمِّيْنِ بِحَا لَا خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है । (ترمذی، 27/2، حدیث: 484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

सुवाल आज कल गूंगे बहरों को तरबियत देने वाले “अल्लाह” का इशारा आस्मान की तरफ़ उंगली उठवा कर सिखाते हैं, यह कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब यह तरीका क़तअन ग़लत है । इन बेचारों के ज़ेहन में येही नज़रिय्यात बैठ जाते होंगे कि “अल्लाह पाक ऊपर है या ऊपर उस का मकान है जिस में वोह रहता है” यह दोनों बातें कुफ़्र हैं । अल्लाह पाक जिहत (या'नी सम्त) से भी पाक है और मकान से भी । आस्मान की तरफ़ इशारा करने के बजाए इन को हाथ के ज़रीए लफ़ज़ “अल्लाह” बनाना सिखाना चाहिये और इस का तरीका निहायत ही आसान है । सीधे हाथ की

उंगलियां मा'मूली सी कुशादा कर के अंगूठे का सिरा ऊपर की तरफ़ थोड़ा सा बढ़ा कर शहादत की उंगली के पहलू के वस्तु में लगा लीजिये, अब सीधी हथेली की पुश्त की तरफ़ देखिये तो लफ़्ज़ “الله (अल्लाह)” महसूस होगा। इसी तरह कर के उलटे हाथ की हथेली की अगली तरफ़ देखेंगे तो अल्लाह लिखा हुआ नज़र आएगा।

फ़िल्में कुफ़्रिय्यात सीखने का ज़रीआ हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के लिये मकान और जिहत (या'नी सम्त) साबित करने वाले जुम्ले लोगों में काफ़ी राइज होते जा रहे हैं मसलन “ऊपर वाला” कहना तो बहुत ज़ियादा आम है। जो कि अक्सर लोगों ने ज़ियादा तर फ़िल्मों ड्रामों से सीखा है। चूँकि हर मुसल्मान कुफ़्रिय्यात की पहचान नहीं कर पाता, इस वजह से न जाने कितने मुसल्मान रोज़ाना येह ग़लतियां करते होंगे। जिन लोगों से ज़िन्दगी में कभी एक बार भी येह जुम्ला सादिर हो गया हो उन्हें चाहिये कि इस से तौबा करें और नए सिरे से कलिमा पढ़ें और अगर शादी शुदा हैं तो नए सिरे से निकाह भी करें। काश ! मुसल्मान बुरे ख़ातिमे का डर अपने अन्दर पैदा करें, फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों से कनारा कशी इख़्तियार करें और ज़रूरिय्याते दीन का इल्म हासिल करें। आह ! मौत हर वक़्त सर पर खड़ी है ! मौत बीमारियों, धमाकों, हंगामों, सैलाबों, तूफ़ानी बारिशों, ज़लज़लों, आतश ज़दगियों नीज़ तेज़ रफ़्तार गाड़ियों के हादिसों के ज़रीए अच्छे ख़ासे कड़ियल जवानों को भी फ़ौरी तौर पर उचक कर ले जाती है और सारी ख़र मस्तियां और फ़न्कारियां ख़ाक में मिल जाती हैं

जल गए परवाने शम्सू पानी पानी हो गई मेरा तेरा ज़िक्र हो कर अन्जुमन में रह गया

(मल्फूजाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/98, 99)

सुवाल अगर बच्चे पूछें कि **अल्लाह** कहां है ? तो उन्हें क्या जवाब दिया जाए और इस मौक़अ पर क्या एहतियातें ज़रूरी हैं ?

जवाब वाक़ेई यह बहुत नाजुक सुवाल है । आम तौर पर लोग ऐसे सुवाल पर ऊपर हाथ उठाते हैं कि **अल्लाह** ऊपर है हालां कि यह बहुत सख़्त कलिमा है इस लिये कि **अल्लाह** पाक किसी जगह में होने से पाक है । मसाजिद को **अल्लाह** का घर बोलते हैं, ख़ानए का'बा को भी बैतुल्लाह या'नी **अल्लाह** का घर कहते हैं लेकिन इस से मुराद यह नहीं है कि **अल्लाह** वहां रहता है । लिहाज़ा अगर बच्चा पूछे कि **अल्लाह** कहां है ? तो जवाब दिया जाए : **अल्लाह** है मगर वोह हमें नज़र नहीं आता या इस तरह का कोई और जवाब दिया जाए । बा'ज़ अवक़ात बच्चे ऐसे सुवालात करते हैं कि उन्हें संभालना मुश्किल होता है । बचपन में हम भी सुनते थे कि गाली मत दो ! झूट मत बोलो ! वरना **अल्लाह** सोने की लकड़ी से मारेगा । तो इस तरह की बहुत सी ग़लत बातें राइज हैं । बच्चों का मुत्मइन होना बहुत मुश्किल है, उन में इतनी अक्ल नहीं होती कि ये बातें समझ सकें । लोग उमूमन ऐसे सुवालात पर बच्चों को डांट देते होंगे कि चुप करो ! तुम्हें इन बातों की समझ नहीं है, इस तरह बच्चों को नहीं डांटना चाहिये ।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/118)

सुवाल बच्चों को **अल्लाह** पाक के बारे में क्या बताना चाहिये ?

जवाब **अल्लाह** “पाक” है, **अल्लाह** पाक “एक” है, हमें सब कुछ **अल्लाह** पाक ही देता है, वोह हमें नज़र नहीं आता, येह नहीं बताएंगे तो बच्चे पूछेंगे : “**अल्लाह** पाक कैसा है ?, कितना बड़ा है ?” वगैरा । नीज़ बच्चों को उन की नफ़िसयात के मुताबिक़ समझाया जाए कि “**अल्लाह**

पाक देख रहा है, हम उसे नहीं देख पाते।” हज़रते सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को तीन साल की उम्र में उन के मामू ने तरबियत दी थी कि “जब तुम बिस्तर पर लैटने लगे तो तीन बार ज़बान को हरकत दिये बिगैर दिल ही दिल में येह कलिमात कहो : “اللهُ مَعِيَ، اللهُ نَاطِرُ الْعِ، اللهُ شَاهِدِي” या’नी अल्लाह पाक मेरे साथ है, अल्लाह पाक मुझे देख रहा है, अल्लाह पाक मेरा गवाह है।” फिर फ़रमाया : “अब सात बार पढ़ो।” कुछ अर्से बा’द फ़रमाया : “अब हर रात ग्यारह बार पढ़ो” येह पढ़ते रहे। (احياء العلوم، 3/91/91) और बा’द में हज़रते सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने उठान ली तो बहुत बड़े वलियुल्लाह बन कर उभरे। आप औलियाए सिद्दीकीन में से थे। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/185)

सवाल - अक्सर माएं वगैरा बच्चों को इस तरह डराती हैं कि “अल्लाह बाबा आ जाएगा” इस तरह कहना कैसा ?

जवाब - लोग “अल्लाह बाबा” ग़ालिबन फ़कीर को कहते हैं, कहने वाले की इस से मुराद अल्लाह पाक की ज़ात नहीं होती। वैसे बच्चे को इस तरह डराना नहीं चाहिये कि बच्चा डरपोक बन जाएगा।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/84)

सवाल - जब अल्लाह पाक देख रहा है तो फ़रिश्ते क्यूं मुक़र्र हैं ?

जवाब - इस बात में कोई शक नहीं कि अल्लाह पाक देख रहा है। येह कुरआने करीम से साबित है और येह हमारे ईमान का हिस्सा है। अगर कोई येह ज़ेहन बनाए कि अल्लाह पाक नहीं देख रहा तो वोह मुसलमान नहीं रहेगा। फ़रिश्तों को मुक़र्र करना येह अल्लाह पाक की मशियत (या’नी मरज़ी) है कि निज़ाम ऐसे चल रहा है, अल्लाह पाक फ़रिश्तों का हरगिज़

हरगिज़ मोहताज नहीं है। फ़रिश्तों का लिखना येह भी एक कसोटी (या'नी इम्तिहान) है कि कितने लोगों का इस के ज़रीए ईमान पुख़्ता होता होगा और कई लोगों का ईमान बरबाद भी होता होगा तो हर मुआमले में कसोटियां या'नी इम्तिहानात हैं।

अल्लाह पाक को हमेशा से ख़बर है

अगर फ़रिश्ते आ'माल न भी लिखें तब भी अल्लाह पाक को पता है। फ़रिश्ते तो उस वक़्त लिखेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि येह अमल हुवा है लेकिन अल्लाह पाक को तो हमेशा से ख़बर है कि कौन क्या करेगा? अरबों ख़रबों अपराद का और तमाम मुआमलात का हर पल बल्कि पल के करोड़वें हिस्से का भी बल्कि मेरे पास बोलने के लिये अल्फ़ाज़ नहीं हैं लेकिन मेरे रब को वोह सब कुछ पता है। थोड़ी देर के बा'द मेरा क्या होगा? मेरे ज़ेहन में क्या बात आएगी? मैं ने क्या बोलना है? मुझ से पहले, फ़रिश्तों से पहले अल्लाह पाक को पता है।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/509, 510)

सुवाल

अल्लाह पाक की ज़ात के मुतअल्लिक़ इस तरह के वसाविस पहले नहीं पाए जाते थे लेकिन अब ऐसे ज़ेहन बनते जा रहे हैं तो इस की उमूमी वुजूहात क्या हो सकती हैं?

जवाब

अल्लाह पाक की ज़ात के मुतअल्लिक़ वसाविस आने का सबब इल्मे दीन की कमी, अशिक़ाने रसूल की सोहबत का न होना है। सोशल मीडिया का किरदार भी हो सकता है कि ऐसी सोच रखने वाले दहरियों और मुन्किरीन की तहरीरें पढ़ने, उन की तक़रीरें और क्लिप सुनने देखने से भी ज़ेहन बरबाद होता होगा। सोशल मीडिया इस्ति'माल करने वाले

मुआमला नहीं है। अल्लाह पाक का कोई बदन नहीं और वोह जिस्मो जिस्मानियत से पाक है। (در مختار، 2/358/1) यह कहना कि “अल्लाह पाक ऊपर है” इसे उलमा ने कुफ़ लिखा है। (بحر الرائق، 5/203) अल्लाह पाक की ज़ात के तअल्लुक से इस तरह के मसाइल समझने के लिये दा’वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब “कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” का मुतालआ कीजिये। اِنَّ شَاءَ اللهُ आप का ईमान ताज़ा हो जाएगा और आप को सेंकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों ऐसे कुफ़्रियात का पता चल जाएगा जो आज कल लोगों में राइज हैं। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/119)

सवाल अगर अदमे तवज्जोह से अल्लाह पाक के बारे में मन्फ़ी कलिमात निकल जाएं तो क्या ईमान जाएअ हो जाता है ?

जवाब अदमे तवज्जोह के कई मा’ना हो सकते हैं, यहां मा’ना वाजेह नहीं। अगर कहना कुछ चाहता था और सब्कते लिसानी से मुंह से बे इख़्तियार कलिमाए कुफ़्र निकल गया मगर अब येह उस पर पच करता है (या’नी अपने मुंह से निकली हुई बात पर अड़ा रहता है) कि मैं ने सहीह कहा है तो अब इस पर कुफ़्र का हुक्म लगेगा कि येह उसे बाकी रख रहा है। इस की मिसाल देते हुए भी نَعُوذُ بِاللّٰهِ डर लगता है। बहर हाल अगर मुसल्मान के मुंह से न चाहते हुए अल्लाह पाक के बारे में कोई तौहीन आमेज़ कलिमा निकल जाए तो येह फ़ौरन اَسْتَغْفِرُ اللّٰه، तौबा तौबा, नहीं नहीं वगैरा कहेगा, लिहाज़ा रुजूअ करने की सूरत में इस पर कोई हुक्म नहीं लगेगा।

(رد المحتار، 6/353/1، बहारे शरीअत, 2/456, हिस्सा : 9)

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/169)

सवाल अल्लाह पाक को सितम (या’नी जुल्म) करने वाला कहना कैसा है ?

जवाब अल्लाह पाक को सितम करने वाला कहना खुला कुफ़्र है और येह कहने वाला काफ़िर हो जाएगा। (फ़तावा अम्ज़दिय्या, 4/432) सितम के मा'ना जुल्म के हैं जब कि अल्लाह पाक जुल्म नहीं करता और वोह जुल्म करने से पाक है। “कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” नामी किताब पढ़ें कि इस में इस तरह के बहुत से कुफ़्रिय्या कलिमात की मिसालें दी गई हैं और येह बयान किया गया है कि कौन सी ऐसी बातें हैं कि जिन्हें बोलने के सबब बन्दा इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है और उस का निकाह टूट जाता है। याद रखिये ! कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है। (107/1, (روايت)) आज कल लोगों को कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में इल्म नहीं होता जिस की वजह से वोह कुफ़्रिय्या कलिमात बोलते रहते हैं और जो नहीं बोलते वोह सुन कर हां में हां मिलाते हैं। अगर सामने वाला खुला कुफ़्र बोल रहा हो तो इस सूरात में अगर सुनने वाला समझ कर हां में हां करेगा तो वोह भी काफ़िर हो जाएगा। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 71) (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/290)

सुवाल अल्लाह पाक के बारे में एक मुसलमान का जो अक्दीदा होना चाहिये उस की मा'लूमात न होने की वजह से किसी ने येह जुम्ला (मेरी किस्मत में शायद अल्लाह पाक कुछ लिखना ही भूल गया है) कहा हो तो फिर क्या हुक्म है ?

जवाब لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ, अल्लाह करीम भूल से पाक है, वोह भूलता नहीं है।⁽¹⁾ जो जुम्ला कहा गया है उस में एक ज़रूरते दीनी का इन्कार पाया जा रहा है, जो कुफ़्र है। (बहारे शरीअत, 1/173, हिस्सा : 1 माखूज़न) अगर कोई

1 ... जैसा कि कुरआने पाक में अल्लाह पाक का इर्शाद है : ﴿وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا﴾ (प. 16, स. 64) : तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हुज़ूर का रब भूलने वाला नहीं।

किसी मुल्क के किसी क़ानून की मुख़ालफ़त करे और जब उस को पकड़ा जाए तो वोह कहे कि मुझे इस बारे में मा'लूम नहीं था, तो उस की येह बात सुनी जाएगी या उसे सज़ा दी जाएगी ? ज़ाहिर है उसे सज़ा दी जाएगी, क्यूं कि येह मुल्की क़ानून है। (जिस तरह हर मुल्क के क़वानीन होते हैं इसी तरह इस्लाम के भी क़वानीन हैं और इस्लामी क़ानून है कि किसी भी ज़रूरते दीनी का इन्कार करने वाला शख़्स मुसलमान नहीं रहता।) इस जुम्ले में तो भूल को **अल्लाह** करीम के लिये जज़्मी तौर पर कह दिया है, जो सरीह या'नी खुला कुफ़्र है, जो शख़्स भी ऐसा बोलेगा वोह इस्लाम से निकल जाएगा और उस का निकाह भी टूट जाएगा। (384/4، خلاصة الفتاوى، बहारे शरीअत، 2/461، हिस्सा : 9)

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/288)

सुवाल

बा'ज अवक़ात गुनाहगार लोग भी हज़ की सआदत हासिल कर लेते हैं, अगर कोई ऐसे किसी शख़्स के बारे में कहे कि “येह तो एक वक़्त की नमाज़ नहीं पढ़ता, बड़ा गुनाहगार आदमी है, इस को हज़ की तौफ़ीक़ मिल गई, देखो ! **अल्लाह** कैसों कैसों को बुला लेता है, हम तो नमाज़ें पढ़ते हैं मगर **अल्लाह** हम को नहीं बुलाता” ऐसा कहना कैसा ?

जवाब

अगर इन मा'नों पर कहता है कि “**अल्लाह** पाक गुनाहगारों पर भी मेहरबान है और उन्हें भी बुला लेता है, जब कि बा'ज अवक़ात नेकों को भी नहीं बुलाता, येह उस की मरज़ी और बे नियाज़ी है” तो ऐसा कहने में हरज नहीं है। अगर **مَعَادُ اللَّهِ** ! ए'तिराज़ करता है कि “**अल्लाह** पाक उन्हें क्यूं बुलाता है ? उसे चाहिये कि नेकों को बुलाए” तो ऐसा शख़्स काफ़िर हो जाएगा। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 141, फ़तावा रज़विय्या, 29/293, 296) (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/417)

सुवाल “अल्लाह वारिस” कहना कैसा ?

जवाब “अल्लाह वारिस” कहना सहीह है क्यूं कि अल्लाह पाक का एक सिफाती नाम “वारिस” है ।

(3861: (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/73) ابن ماجه، 4/279، حدیث: 3861)

सुवाल किसी के साथ अगर कुछ हो जाए तो वोह कह देता है कि “अल्लाह पाक ने मेरे साथ जुल्म किया” ऐसा कहना कैसा ?

जवाब اَسْتَغْفِرُ اللّٰه ! ऐसा कहना कुफ़्र है । अल्लाह पाक को ज़ालिम कहने वाला मुसल्मान नहीं रहता । (फ़तावा अम्जदिय्या, 4/432) अगर نَعُوذُ بِاللّٰهِ किसी ने ऐसा कहा है तो इस से तौबा करे, कलिमा पढ़ कर नए सिरे से मुसल्मान हो और शादी शुदा था तो नए सिरे से निकाह भी करे । (फ़तावा अम्जदिय्या, 4/432) किसी का मुरीद था तो अब दोबारा जिस जामेए शराइत पीर से चाहे मुरीद हो जाए । (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 524, 525) अल्लाह करीम ईमान सलामत रखे । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/304)

सुवाल अपने आप को सच्चा साबित करने के लिये बा'जू लोगों को येह कहते हुए सुना है : “अल्लाह को हाज़िरो नाज़िर जान कर कह रहा हूं” ऐसा कहना कैसा ?

जवाब उलमाए किराम ने अल्लाह पाक के लिये हाज़िरो नाज़िर का लफ़्ज़ इस्ति'माल करने से मन्अ फ़रमाया है । (बहारे शरीअत, 2/932, हिस्सा : 12) हाज़िरो नाज़िर की जगह अल्लाह पाक के लिये समीओ बसीर का लफ़्ज़ इस्ति'माल किया जाए । (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 571) इसी तरह हल्फ़ उठवाया जाता है या'नी क़सम ली जाती है, इस में भी अल्लाह पाक के लिये हाज़िरो नाज़िर के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये जाते हैं जो शर्अन मन्मूअ और ग़लत हैं । हल्फ़ उठाते वक़्त येह अल्फ़ाज़

कहे जाएं : मैं अल्लाह पाक को समीओ बसीर जान कर कहता हूं ।

(फ़तावा रज़विyyा, 14/640, 641, 688, 689) (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/351)

सवाल लोग कहते हैं कि जब अल्लाह पाक को दुन्या में नहीं देख सकते तो क़ियामत में किस तरह देखेंगे ?

जवाब जन्नत को भी तो हम ने दुन्या में नहीं देखा और इस के इलावा भी बहुत कुछ नहीं देखा मगर हम ईमान लाते हैं, तो जब अल्लाह पाक चाहेगा हम जन्नत में ज़रूर जाएंगे, अल्लाह पाक की अ़ता से महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके जब हम जन्नत में जाएंगे तो वहां सब से बड़ी ने'मत अल्लाह पाक का दीदार है । (बहारे शरीअत, 1/162, हिस्सा : 1) वोह भी अल्लाह पाक के करम से अ़ता होगा और जैसे अल्लाह पाक चाहेगा हम वैसे उस का दीदार करेंगे, इस बारे में अ़क़ल के घोड़े दौड़ाने की ज़रूरत ही क्या है ? (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/181)

सवाल क्या नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इलावा किसी ने अल्लाह पाक का दीदार किया है ? अगर किया है तो उन का नाम भी बता दीजिये ।

जवाब जागती हालत में सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इलावा किसी ने भी अल्लाह पाक का दीदार नहीं किया और आप के इलावा किसी और के लिये दुन्या में जागती आंखों से दीदार मुहाल है । अलबत्ता ! ख़्वाब में औलियाए किराम को ज़ियारत हो सकती है और हुई भी है जैसा कि हज़रत इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ को ख़्वाब में 100 बार अल्लाह पाक का दीदार हुवा । (169) **إِنْ شَاءَ اللهُ** (निरास, स 169) हम सब आख़िरत और क़ियामत में नीज़ प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत के सदके जब जन्नत में जाएंगे तो वहां भी अल्लाह पाक की ज़ियारत करेंगे । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/173)

सुवाल “अल्लाह पाक की दुआ से येह काम हो गया” कहना कैसा है ?

जवाब अल्लाह पाक की दुआ से सब ठीक है वगैरा, इस तरह के जुम्ले लोग जहालत की वजह से बोल रहे होते हैं, येह जुम्ला नहीं कहना चाहिये । हम अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ करते हैं, अल्लाह पाक किसी से दुआ नहीं करता, अल्लाह पाक की जात सब से बड़ी है और सब को वोही देने वाला है । लोग आपस में एक दूसरे को भी कहते हैं कि आप की दुआ से सब ठीक है, आप की दुआ से फुलां काम हो गया, येह जुम्ले तो कह सकते हैं लेकिन येह कहना कि “अल्लाह पाक की दुआ से येह काम हो गया” दुरुस्त नहीं है । (मल्फूजाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/232)

सुवाल अल्लाह पाक को दुआ में सखी कहना कैसा है ?

जवाब दुआ और दुआ के इलावा भी अल्लाह पाक को सखी कहना मन्अ है । अल्लाह पाक को सखी कहने के बजाए “जवाद” कहना चाहिये । (फ़तावा रजविय्या, 27/165) हां ! प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सखी कह सकते हैं । (मल्फूजाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/38)

सुवाल “फुलां काम मैं कर दूंगा, बाकी अल्लाह मालिक है” कहना कैसा है ?

जवाब इस तरह कहने में कोई हरज नहीं । इस का मतलब येह नहीं कि जो मैं करूंगा उस का अल्लाह मालिक नहीं है बल्कि येह इस मा'ना में है कि फुलां काम करने की कोशिश मेरी तरफ से और तक्मील अल्लाह पाक की तरफ से होगी जैसा कि हम कहते हैं कि नेकी की दा'वत देना हमारा काम है और हिदायत अल्लाह पाक देगा चूंकि हर शै का मालिक अल्लाह पाक है, अगर कोई अपने क़लम के बारे में कहे कि क़लम मेरा है तो इस का मतलब येह नहीं होता कि अल्लाह पाक इस का मालिक न रहा बल्कि

इस का हकीकी मालिक अल्लाह पाक ही है और अल्लाह पाक ने उसे अता किया है, इसी तरह येह भी बतौर मुहावरा कहा जाता है कि “फुलां काम में कर दूंगा, बाकी अल्लाह मालिक है” लिहाजा येह मुहावरा बोलने में कोई गुनाह या कुफ़्र नहीं। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/204)

सवाल “अल्लाह पाक दुन्या में होने वाले जुल्म को क्यूं नहीं रोकता ?” कहना कैसा है ?

जवाब येह अल्फ़ाज़ ए'तिराज़ के हैं और अल्लाह पाक पर ए'तिराज़ करना कुफ़्र है। येह दुन्या दारुल अमल है और इस में बन्दों का इम्तिहान है लिहाजा अगर कोई जुल्म कर भी रहा है तो वोह अपने लिये जहन्नम का अज़ाब तय्यार कर रहा है और जिस पर जुल्म हो रहा है अगर वोह सब्र करे तो उस के लिये जन्नत का ख़ज़ाना है। दुन्या के निज़ाम में अल्लाह पाक की बे शुमार हिक्मतें होती हैं इस लिये अल्लाह पाक ने जो भी किया वोह सहीह किया और उस पर ए'तिराज़ की कोई गुन्जाइश बल्कि ए'तिराज़ का तसव्वुर भी नहीं है। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/504)

सवाल किसी ने कहा कि “भाई इतनी नेकियां भी न करो कि खुदा की जज़ा कम पड़ जाए” ऐसा कहना कैसा है ?

जवाब لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ येह खुला कुफ़्र है। किसी ने अगर्चे येह जुम्ला मज़ाक़ में बोला होगा लेकिन मज़ाक़ में बोला गया कुफ़्र भी कुफ़्र ही होता है। तौबा اسْتَغْفِرُ اللّٰهَ ऐसा सोचना भी नहीं चाहिये और मुसलमान ऐसा सोच भी नहीं सकता। यकीनन येह बुरी सोहबतों और फ़िल्मी डायलोग सुनने का नतीजा है, इन में इस तरह की बातें होती होंगी। अल्लाह पाक करम फ़रमाए और हमारा ईमान सलामत रखे। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/290)

सुवाल अल्लाह पाक सब कुछ सुनता जानता है, बा'जु लोग फिर भी येह जुम्ता कहते हैं : “आप दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह पाक मेरी सुन ले या मेरी दुआ क़बूल कर ले” ऐसा कहना कैसा ?

जवाब अल्लाह पाक का एक सिफ़ाती नाम “समीअ” भी है, समीअ का मा'ना है सुनने वाला । याद रहे ! अल्लाह पाक का सुनना हमारे सुनने की तरह नहीं है, हम लोग सुनने के लिये जिस्मानी कान के मोहताज हैं लेकिन अल्लाह पाक कान से पाक है, वोह हमारी तरह जिस्मो जिस्मानिय्यत वाला नहीं है, अगर कोई अल्लाह पाक का जिस्मानी कान माने तो वोह काफ़िर हो जाएगा । (1358/2) अल्लाह पाक अपनी शान के लाइक़ सुनता है और बारीक से बारीक आवाज़ भी सुनता है, कोई आवाज़ उस से पोशीदा नहीं है, लिहाज़ा यूं दुआ कर सकते हैं : ऐ अल्लाह पाक ! मेरी दुआ क़बूल फ़रमा ले । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/222)

सुवाल अल्लाह पाक को God कहना कैसा है ?

जवाब अल्लाह पाक के लिये God जैसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने से बचना चाहिये । अल्लाह पाक के जो मुबारक नाम मशहूर हैं और जिन नामों से अ़शिक़ाने रसूल उ़लमाए किराम अल्लाह पाक का ज़िक़े ख़ैर करते हैं हम ने सिर्फ़ वोही नाम इस्ति'माल करने हैं और God वग़ैरा अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने से बचना है । अल्लाह पाक के लिये अल्लाह, खुदा और परवर्दगार जैसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये जा सकते हैं अगर्चे परवर्दगार और खुदा अरबी नाम नहीं हैं, मगर उ़लमाए किराम इन्हें इस्ति'माल करते हैं । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/371)

सुवाल क्या अल्लाह पाक से सब कुछ मांग सकते हैं ?

जवाब जी हां ! तमाम जाइज़ चीज़ें अल्लाह पाक से मांग सकते हैं । अलबत्ता गुनाहों की दुआ नहीं कर सकते । (फ़ज़ाइले दुआ, स. 176) जैसे نَعُوذُ بِاللّٰهِ यह दुआ नहीं कर सकते कि मुझे शराब दे दे ।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/317)

सवाल घर में जवान मौत हो जाए तो बा'ज अवकात बे सब्बी में ज़बान से ऐसे अल्फ़ाज़ निकल जाते हैं जो नहीं निकलने चाहिएं, इस के मुतअल्लिक़ कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये ।⁽¹⁾

जवाब घर में जवान या किसी की भी मौत हो जाए तो सब्र ही करना चाहिये । इस मौक़अ पर बा'ज अवकात ज़बान से ऐसे अल्फ़ाज़ निकल जाते हैं जो नहीं निकलने चाहिएं । बा'ज अवकात तो वोह जुम्ले कुफ़्रिय्या भी होते हैं मसलन बा'ज लोग यूं कहते होंगे कि इस की मरने की कोई उम्प्र थी ? बा'ज कहते होंगे : **या अल्लाह !** तुझे इस की जवानी पर भी तर्स नहीं आया ? نَعُوذُ بِاللّٰهِ ! अगर किसी ने यह कहा तो कहने वाला काफ़िर हो गया, इस्लाम से निकल गया क्यूं कि उस ने अल्लाह पाक को बे रहूम कहा । यकीनन अल्लाह पाक बे रहूम नहीं है । अल्लाह पाक जो करता है वोह दुरुस्त करता है, सहीद करता है । किसी का वक़्त जब पूरा हो जाता है तो उस का इन्तिक़ाल हो जाता है । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/361)

सवाल अगर किसी ने ता'ज़ियत करते वक़्त कुफ़्रिय्या जुम्ला बक दिया अब उस की ताईद करना कैसा ?

जवाब कुफ़्रिय्या जुम्ले की ताईद भी कुफ़्र है । अगर ग़मी के मौक़अ पर बन्दा खुद कुफ़्रिय्या जुम्ला नहीं बोलता तो बसा अवकात ता'ज़ियत

1 ... यह और इस से अगला सुवाल शो'बा मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत ने काइम किया है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دامّة برکاتہم العالیہ ने इनायत फ़रमाया है ।

करने वाले बुलवा देते हैं मसलन कोई ता'जियत करते हुए कहेगा : **अल्लाह** पाक को पता नहीं इस की क्या ज़रूरत पेश आ गई थी जो जवानी में ही इसे उठा लिया ? अब सुनने वाला भी ऐसे जुम्ले कहेगा ? वाक़ेई कोई ज़रूरत पेश आ गई होगी या फ़क़त हां ! हां ! कह कर ही ताईद कर देगा तो ऐसे जुम्ले बोलना या उन की ताईद करना दोनों बातें ही कुफ़्र हैं क्यूं कि **अल्लाह** पाक को किसी की हाज़तो ज़रूरत नहीं, वोह किसी का मोहताज नहीं, हम उस के मोहताज हैं चुनान्चे इशादि रब्बुल इबाद है :
 (38) ﴿وَاللَّهُ الْعَزِيزُ وَأَنْتُمْ أَفْقَرُ أَعْيُنًا﴾ (प 26, मुः 38) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान** : “और **अल्लाह** बे नियाज़ है और तुम सब मोहताज ।” तो हम सब उस के दर के मोहताज हैं लिहाज़ा अगर किसी ने **अल्लाह** पाक को मोहताज कहा तो वोह काफ़िर हो गया ।

कुफ़्र बकने से निकाह और ईमान ख़त्म हो जाता है

जिस ने इस तरह का कुफ़्रिया जुम्ला बका तो उस का ईमान और निकाह दोनों ख़त्म हो गए बल्कि जिन्हों ने समझने के बा वुजूद हां में हां मिलाई, अगर्चे मुंह से नहीं बोले फ़क़त सर ही हिलाया और दिल में उस बात को दुरुस्त जाना तो येह भी इस्लाम से निकल गया, उस को भी नए सिरे से तौबा कर के कलिमा पढ़ना होगा, अगर शादी शुदा था तो निकाह भी दोबारा करना होगा, हज़ किया था तो वोह भी गया लिहाज़ा इस्तिताअत होने की सूरत में दोबारा हज़ करना होगा । बाकी सारी नेकियां भी कुफ़्र के सबब बरबाद हो जाती हैं, अगर ज़मानए इस्लाम की क़ज़ा नमाजें बाकी थीं तो वोह ईमान लाने के बा'द अदा करना होंगी । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/363)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अगले हफ्ते का रिसाला

